अध्याय 16

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	बाँटना (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 4:23–7:60

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **बताएं** (या अपनी कॉपी में से **पढ़ें**) की आपने परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत तौर पर बिताएं समय में निर्धारित बाइबल खण्ड (प्रेरितों 4:23–7:60) में से क्या सीखा।
बताने वाले व्यक्ति की बातों को गम्भीरता से लें तथा स्वीकार करें। उसकी बातों पर वाद विवाद न करें।

3	याद करें (20 मिनट) [मसीह में नया जीवन] वचन : मत्ती 4:4

क. मनन

याद करने वाले वचन को श्याम या श्वेत पट पर निम्नलिखित तरीके से लिखें

वचन मत्ती 4:4
यीशु ने उत्तर दिया, लिखा है कि 'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं परन्तु परमेश्वर के मुँह से निकले प्रत्येक वचन से जीवित रहता है।'' मत्ती 4:4

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के वचन को लिखें।

1. **'लिखा है' शब्दों को क्या आशय है?**
यीशु ने जब भी कभी बाइबल में लिखे वचनों को उद्धरित किया तो इन शब्दों का इस्तेमाल ज़रूर किया। यीशु को बाइबल का उच्च ज्ञान था। वह बाइबल को जीवन व सिद्धान्तों के लिए मील का पत्थर मानते थे। वह हर बात के लिए बाइबल के सिद्धान्तों को निर्णायक माना करते थे। शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा किये जाने पर , यीशु ने तीन बार बाइबल के पदों का इस्तेमाल किया (व्यवस्थाविवरण 8:3;6:16;6:13)।

2. **भूतकाल में परमेश्वर द्वारा बोले गये वचनों ने किस प्रकार लोगों को जीवन प्रदान किया?**

पहला उदाहरण। हम बाइबल के पहले अध्याय में ही देखते हैं कि परमेश्वर ने कहा, कि ' ज्योति हो जा!' और ज्योति हो गयी। परमेश्वर के मुँह से निकला हर एक वचन इतना शक्तिशाली था कि उसके द्वारा धरती उसमें पायी जाने वाली सारी वस्तुओं के साथ तथा सारा सौर्य मण्डल सारे सितारों के साथ अपने अस्तित्व में आ गया। (भजन 33:6; इब्रानियों 11:3)।

दूसरा उदाहरण। इस्राएलियों को नम्र व दीन करने तथा उनकी परीक्षा करने के लिए परमेश्वर उन्हें चालीस वर्षों तक र्निजन प्रदेश में से लेकर चला (व्यवस्था विवरण 8:2–3)। ' नम्र या दीन करने ' को 'उन पर दबाव डालना' भी कहा जा सकता है। परमेश्वर इस्राएलियों की परीक्षा करने के लिए उन्हें उस परिस्थिति में ले आया जिसमें उन पर दबाव था। वे र्निजन प्रदेश में थे, जहाँ उनके पास पर्याप्त मात्रा में रोटी नहीं थी, जिस कारण उन्हें भूख का सामना करना पड़ता था। हालांकि परमेश्वर इस्राएलियों के हृदय की गति को भलि भाँति जानते थे लेकिन परीक्षा के द्वारा वह उनकी मनोदशा को प्रगट करना चाहते थे। लेकिन परमेश्वर ने उनकी इस दबावपूर्ण परिस्थिति में उनका बहुतायत से ख्याल भी रखा। उसके बोले गये शब्दों के द्वारा उसने उनके खाने के लिए मन्ना का प्रयोजन किया। इसके अलावा उसने उनकी अन्य जिम्मेदारियों को उठाया और इस दौरान

उनके न तो कपड़े फटे और इतना लम्बा सफर करने पर भी उनके पांव नहीं सूजे। परमेश्वर इस्राएलियों को इस दबाव पूर्ण परिस्थितियों में इसलिए लाया और उनकी परवाह की ताकि वे खुद पर और अन्य किसी सृष्टि पर भरोसा न करके, केवल परमेश्वर पर ही भरोसा करें। परमेश्वर इस घटना के द्वारा इस्राएलियों को सिखाना चाहते थे कि वे तथा बाकि संसार पूरी तरह उसके वचनों पर निर्भर है जो इस जगत की नींव को सम्भाले रहते हैं।

तीसरा उदाहरण। जिब्राएल स्वर्गदूत ने मरियम से कहा,' परमेश्वर का कहा वचन कभी प्रभावरहित नहीं होता'(लूका 1:37)। वह इस बात को बता रहा था कि मरियम कुंवारी अवस्था में अर्थात किसी आदमी से किसी प्रकार का शारीरिक सम्बन्ध बनाये ही एक पुत्र को जन्म देगी। परमेश्वर के सामर्थी वचनों के द्वारा ही यीशु ने एक मनुष्य रूप धारण किया (लूका 1:34–38)।

चौथा उदाहरण। मरूस्थल में चालीस दिन उपवास रखने के बाद, यीशु को भूख लगी। शैतान ने चाहा कि यीशु परमेश्वर पर विश्वास न करके, अपनी सामर्थ्य पर भरोसा करे और पत्थरों को रोटी बना दे। शैतान लोगों को विश्वास दिलाना चाहता है कि लोग अपनी ताकत व ज्ञान से अपनी परिस्थितियों को सहज बना सकते हैं और उन्हें परमेश्वर की ज़रूरत नहीं है। लेकिन यीशु मसीह ने बताया कि यह सब मनुष्य की ताकत से नहीं है, परन्तु परमेश्वर ही अपने शब्दों द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ज़रूरी परिस्थितियों को उत्पन्न करता है। आप परमेश्वर पर विश्वास करें या न करें, लेकिन यदि परमेश्वर अपने सामर्थी व रचनात्मक शब्दों को न बोले, तो वहाँ रोटी का नामों निशान नहीं होगा।

3. परमेश्वर द्वारा बोला गया प्रत्येक वचन मनुष्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं?

परमेश्वर द्वारा बोले गये शब्द इतने शक्तिशाली हैं कि उनसे हवा बनी ताकि मनुष्य सांस ले सके, वर्षा व रौशनी बनी ताकि मनुष्य फसल उगा सके और भोजन खा सके। वह इतने सामर्थी हैं मनुष्य को हम मिनट व हर क्षण सम्भाल कर रखते हैं। यदि परमेश्वर ने अपने शब्दों को न बोला होता तो, न वर्षा होती, न रौशनी होती, न भोजन होता, न पानी होता, न सांस लेने के लिए हवा होती, न सुन्दर पेड़ व पौधे होते। कुछ भी नहीं होता, क्योंकि परमेश्वर ही अपने शब्दों द्वारा सृष्टि बनाता और संभालता है। इसलिए ही यीशु ने कहा कि मनुष्य परमेश्वर के मुँह से बोले गये वचनों द्वारा जीवित रह सकता है! परमेश्वर द्वारा बोले गये वचन, सारी सृष्टि, सारी परिस्थितियों तथा सम्पूर्ण इतिहास पर परमेश्वर के राजकीय अधिकार को दर्शाते हैं।

4. परमेश्वर का प्रत्येक लिखित वचन मनुष्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

परमेश्वर ने आज्ञा दी की उसके द्वारा बोले गये किन वचनों को लिखा जाए और वे परमेश्वर के लिखित वचन बन गये! बाइबल में लिखे गये परमेश्वर के वचन भी सामर्थी व प्रभावशाली हैं। मनुष्य परमेश्वर के द्वारा निर्धारित किये गये जीवन को तभी जी सकता है, जब वह अपने जीवन में परमेश्वर के लिखित वचनों का पालन करता है। बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचनों में परमेश्वर के रहस्यों को प्रगट करने की शक्ति पायी जाती है (लूका 8:10), और जिस प्रकार कोई हथौड़ा किसी पत्थर को तोड़ता और आग भूंसे को जलाती है उसी तरह परमेश्वर का वचन मनुष्य के झूठे विचारों तथा तर्कों को नाश कर देता है (यिर्मयाह 23:29)। लिखित परमेश्वर के वचनों में मनुष्यों के विचारों व उसकी मनोदशा को जाँचने की शक्ति (इब्रानियों 4:12), वचनों पर विश्वास करने वाले लोगों को बचाने की शक्ति (रोमियों 10:13–17) तथा विश्वासियों को आत्मिक बातों में बढ़ाने की शक्ति होती है (1 पतरस 2:2)। परमेश्वर के लिखित वचन लोगों को परमेश्वर की सच्चाई बताने, लोगों को उनके पापों से अवगत कराने तथा लोगों की गलतियों में सुधार करके उन्हें परमेश्वर का सशक्त दास बनाने के लिए अति कारगर साबित होते हैं(2 तीमुथीयुस 3:16–17)।

ख. याद करना और पुनरावलोकन

1. किसी खाली कार्ड या कोपी के किसी पन्ने पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2. बाइबल की आयत को सही तरीके से ***याद करें।*** आयतः मत्ती 4:4
3. ***पुनरावलोकन करें।*** दो दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी आयत को सुनें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) (सम्बन्ध) मसीही मित्रता, यूहन्ना 15:13–15

पाँच चरणों वाले अध्ययन पद्धति का इस्तेमाल करते हुए यूहन्ना 15:13–15 का अध्ययन करें।

कदम1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन
पढें। आइये हम साथ मिलकर यूहन्ना 15:13–15 पढ़ें। बारी बारी करके सब लोग तब तक एक पद पढ़ें जब तक वह निर्धारित वचन समाप्त न हो जाएं।

कदम 2. खोजें। अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में पाया जाने वाली कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की सच्चाई ने आपके हृदय और मन को छुआ है?

लिखें। एक या दो बातों की सच्चाई की खोज करें जो आपको समझ में आ रही हो। उनके बारे में विचार करें तथा अपनी कॉपी में अपने विचार लिखें।

बांटें। (समूह के लोगों को दो मिनट का समय सोचने और लिखने के लिए देने के बाद, अपनी बातों को आपस में बाँटें) आईये बारी बारी बताएं कि आपको क्या प्राप्त हुआ है।

(नीचे कुछ लोगों द्वारा बांटी गयी गवाही के कुछ उदाहरण हैं कि उन्हें क्या खोज की। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग अलग बातें बाँट सकते हैं, ऐसा कोई ज़रूरी नहीं कि वे ये ही बातें बोलें)

15:13

खोज 1. मैं,जो पहले दुश्मन था, यीशु का मित्र कहलाया।

यीशु ने कहा कि सबसे बड़ा प्रेम है कि कोई अपने मित्र के लिए अपने प्राण दे दे। मुझे यह बात सबसे ज्यादा छूती है कि यीशु ने मुझे अपना मित्र कहा। रोमियों 5 में मैं पढ़ता हूँ कि मैं मसीही बनने से पहले क्या था। उस समय मैं कमज़ोर, भक्तिहीन, एक पापी और परमेश्वर का शत्रु था। मैं अपने चरित्र में बुरी तरह कमजोर था और खुद को परिवर्तित करने में असहाय। मैं भक्तिहीन था। हालांकि मैं किसी 'भगवान' कहे जाने वाले जन पर विश्वास करता था, लेकिन सच्चे और जीवित परमेश्वर के बारे में मेरे विचार बिल्कुल गलत थे। मैं सोचता था कि वह इतनी ऊँचाई पर विराजमान है कि कोई भी उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता। मैं इस डर के मारे कि कहीं वह मुझे अपने स्वर्ग में जगह न दे, मैं दिन में काफी बार प्रार्थना किया करता,लम्बे समय के लिए उपवास करता, पर्याप्त मात्रा में दान दिया करता और धार्मिक गतिविधियों में भाग लिया करता था। मैंने कभी ऐसा सोचा ही नहीं था कि कभी परमेश्वर मेरा मित्र बनना पसन्द करेंगे। लेकिन अब यीशु मुझे अपना मित्र कहते हैं। इस संसार में मेरे बहुत से मित्र हैं, लेकिन उनमें से कोई भी यीशु के तुल्य नहीं है। एक मित्र के रूप में वह हमेशा मेरे नज़दीक रहते हैं और मेरे साथ मिलकर काम करते हैं। मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो पहले कभी परमेश्वर का शत्रु हुआ करता था अब यीशु मसीह का मित्र कहलाता है।

15:14

खोज 2. मित्रता के अर्न्तगत जिम्मेदारी है।

यीशु ने कहा''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानते हो तो तुम मेरे मित्र हो।'मैं मानता हूं कि मित्रता अपने आप नहीं हो जाती। मित्रता में बहुत सी जिम्मेदारियां शामिल होती हैं। मैं यीशु का मित्र केवल तभी हो सकता हूँ जब मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करूं। यूहन्ना 15:9–10 में यीशु कहते हैं ''मेरे प्रेम मे बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानते हो तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे।'' अपने जीवन में लगातार मसीह की इच्छा पूरी करने से मैं आश्वस्त होता हूँ कि मैं उसके प्रेम में बना हुआ हूँ। यह मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उसकी आज्ञाओं को जानूं, लेकिन उसके साथ साथ यह भी मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उसकी आज्ञाओं का पालन करूँ। मेरे लिए सबसे बड़ी बात यह है कि यदि मैं मित्रता करना चाहता हूँ, तो उस मित्रता के रिश्ते के अन्तर्गत मेरी कुछ जिम्मेदारियां भी है।

कदम 3. प्रश्न। वर्णन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद के आधार पर आप इस समूह से क्या प्रश्न पूछना चाहेगें?
आईये हम यूहन्ना 15:13–15 में पायी जाने वाली सारी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें, और उन बातों को लेकर प्रश्न करें जिन्हें अभी तक हम समझ नहीं पायें हैं।

लिखें। स्पष्ट तौर पर अपने प्रश्नों को स्वरूप प्रदान करें। तथा अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।

बांटें। (समूह के लोगों को दो मिनट का समय सोचने और लिखने के लिए देने के बाद, हर एक जन पहले अपने प्रश्न के बारे में बताए)

चर्चा करें। (फिर, कुछ प्रश्नों को चुनाव करके, अपने समूह के सदस्यों के साथ चर्चा करने के बाद इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें।)

कुछ ऐसे प्रश्नों के उदाहरण जो विद्यार्थी पूछ सकते है और कुछ प्रश्नों पर की गयी चर्चा के सम्बन्ध में लेख निम्नलिखित हैं।

15:13

प्रश्न1. अपने मित्र के लिए अपने प्राण को दे देने का अर्थ क्या है?

टिप्पणी। हमें इस बात की फरक को पहिचानना ज़रूरी है कि मित्र के रूप में यीशु ने किस प्रकार हमारे लिए अपना प्राण दिया और जिन लोगों को हम अपना मित्र कहते हैं उनके लिए हम किस प्रकार से अपने प्राण कों दें।

एक तरीके से देखा जाए तो यीशु का प्रेम अनोखा था।

क्रूस पर अपने प्राण हमारे लिए कुर्बान करते समय जो प्रेम यीशु हमसे करते थे वह अनोखा था। उसे अथाह प्रेम की अहमियत,उसके प्रेम के वैकल्पिक रूप तथा उसके प्रेम के द्वारा प्राप्त छुटकारे की तुलना हम अपने प्रेम में नहीं कर सकते। इस तरह यीशु का प्रेम बिल्कुल अनोखा था और कोई भी जन उसके प्रेम की नकल नहीं कर सकता। यीशु केवल हमारे फायदे के लिए ही नहीं मरा, बल्कि वह हमारे बदले मरा। मसीह का प्रेम वैकल्पिक प्रेम है। उस प्रेम करने की कीमत हमारे पापों के दण्ड को भुगतने और हमारे कारण अपने पिता द्वारा छोड़ दिये जाने की यातना सहने के द्वारा चुकानी पड़ी। हम इस तरह अपने मित्रों के बदले दुःख उठाकर वैकल्पिक प्रेम नहीं कर सकते हैं।

दूसरी तरह से देखा जाए तो यीशु का प्रेम हमारे लिए एक आदर्श है।

यूहन्ना 15:12–15 में लिखा है, ' मेरी आज्ञा यह है कि जिस तरह मैंने तुम्हें प्रेम किया है, वैसे ही तुम एक दूसरे को प्रेम करो। इससे बढ़कर और कोई प्रेम नहीं है कि कोई जन अपने मित्र के लिए अपना प्राण दे।'' यह इस बात को दर्शाता है कि यीशु मसीह का हमारे लिए दर्शाया गया प्रेम एक आदर्श है जिसके आधार पर हम भी अपने मित्रों को प्रेम कर सकते हैं। यह मसीह के प्रेम की विशेषता है, जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए, जो कि अपने आप में एक कुर्बानी चढ़ाने वाला प्रेम है। यीशु कह रहे हैं कि जिस प्रकार मैंने तुम्हें "आत्म–बलिदान चढ़ाते हुए प्रेम किया है, उसी प्रकार तुम भी आत्म–बलिदान चढ़ाते हुए एक दूसरे के साथ प्रेम करो। हम तब आत्म बलिदान चढ़ाते हुए प्रेम करते हैं जब हम दूसरों को प्रेम करने के लिए अपने आप का और अपनी इच्छाओं का इनकार करते हैं। आत्म बलिदान चढ़ाने वाले प्रेम की सदैव एक कीमत होती है। इसके लिए धन, समय, शक्ति देनी पड़ती है और अपने आपे का इनकार करना पड़ता है। हालांकि मैं अपने मित्रों को वैकल्पिक प्रेम नहीं दिखा सकता, लेकिन मुझे अपने मित्रों को आत्म बलिदान चढ़ाने वाला प्रेम करना चाहिए। जब मैं अपने मित्रों के लिए कुछ कुर्बान करता हूँ तो मैं आत्म बलिदान करने वाले प्रेम को दर्शाता हूँ।

मसीही मित्रता की प्रथम विशेषता

मसीही मित्रता की प्रथम विशेषता यह है कि सच्ची मित्रता हमेशा दूसरों के लिए पहले करती है और दूसरे के लिए कुर्बानी चढ़ाती है। मसीही मित्र कभी यह नहीं पूछते,'' मुझे इस रिश्ते से क्या हासिल होगा?'' मसीही मित्र हमेशा पूछते हैं, ''इस सम्बन्ध में मेरा क्या योगदान है?''

15:14

प्रश्न 2. कोई जन यीशु का मित्र तभी क्यों बन सकता है जब वह उसकी आज्ञाओं का पालन करे?

टिप्पणी.

यीशु की ज़िम्मेदारी। वह हमें कृपापूर्ण प्रेम करता है।

यदि मैं यीशु की कुछ आज्ञाओं को मानने से चूक जाऊँ, तौभि क्या मैं यीशु का मित्र ठहरूंगा? यह एक रूचिकर प्रश्न है। आईये ध्यान से देखें के उस समय चेले कैसे थे। फसह के समय भोजन करते समय उसके चेले आपस में इस बात पर बहस कर रहे थे कि उनमें से बड़ा कौन है (लूका 22:24)। लेकिन जब वे उपरौठी कोठरी पर पहुँचे तो कोई भी जन किसी के पांव धोने को तैयार नहीं था (यूहन्ना 13)। उसके बाद हम देखते हैं कि वे यीशु के साथ एक पहर भी प्रार्थना न कर सके। और जब भीड़ यीशु को गिरफ्तार करने के लिए आयी तो पतरस ने अपनी तलवार निकालकर एक सैनिक का कान काट दिया। उसके बाद सारे चेले यीशु को अकेला छोड़कर भाग गये। उसकी अगली सुबह ही पतरस ने यीशु का तीन बार इनकार किया। इस प्रकार की बहुत सी घटनाओं के द्वारा चेलों ने अपने चरित्र की कमियों को प्रगट किया। फिर भी, जबकि यीशु जानते थे की उनके साथ यह सब कुछ होने वाला हैं, उसने अपने चेलों को मित्र कहा। वास्तव में यीशु का प्रेम कितनी कृपा से पूर्ण है। हमारे प्रति उसका प्रेम हमारी कमजोरियों या असफलताओं पर आधारित नहीं है बल्कि वह हमारे प्रति दिखाये गये कुर्बानी चढ़ाने वाले प्रेम पर आधारित है!

हमारी ज़िम्मेदारी। हमें यीशु की शर्तों व सिद्धान्तों पर आधारित होकर मित्रता करनी चाहिए।

यीशु मसीह के साथ मित्रता बनाए रखने के लिए, हमारी भी एक ज़िम्मेदारी है। हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम यीशु की शर्त्रों पर ही उसके साथ मित्रता करें। यीशु के साथ मित्रता हमारी शर्त्रो पर कायम नहीं होती बल्कि उसकी शर्तों पर कायम होती है। यीशु ही निर्धारित करते हैं कि उसके साथ मित्रता बनाने में कौन सी चीजें शामिल होती हैं और कौन सी बातें इस मित्रता में शामिल नहीं हो सकतीं। वह ही आज्ञाओ को देता है। वह ही इस मित्रता की सीमाओं को निर्धारित करता है। यह बहुत ज़रूरी है। यीशु के साथ मित्रता करना संसार के साथ मित्रता करने जैसा नहीं है। संसार के साथ मित्रता में दो पक्षों की भावनाओं का मिलन होता है, जिसमें

लोगों की पसन्द या नापसन्द का ख्याल रखा जाता है, और एक साथ रहने और काम करने में बढ़ा मज़ा भी आता है। लेकिन यीशु के साथ मित्रता करना बिल्कुल अलग है। इस सम्बन्ध की अपनी सीमाएं व स्तर होता है। हम यीशु की आज्ञाओं का पालन करने पर ही उसके मित्र बन सकते हैं। यीशु उसके साथ सम्बन्ध बनाने की सीमाओं को तय करता है।

हम उसके चुने हुए लोग हैं इसीलिए हमारे प्रति यीशु का प्रेम तथा यीशु के प्रति हमारा प्रेम सम्भव हो पाया है।

हम एक तरफ यीशु की आज्ञाओं को पूरा करने की ज़िम्मेदारी पूरा करते हुए, कैसे हमारे प्रति यीशु की कृपापूर्ण प्रेम को प्राप्त कर सकते हैं, जबकि हम में दूसरी ओर बहुत सी कमियां होती हैं? इसका जवाब हमें यूहन्ना 15:19 में मिलता है, जहां यीशु कहते हैं, 'मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है'। उसने चेलों को अपना होने के लिए चुन लिया था। उसने अपने चेलों को शैतान के अधिकार तथा पाप से बचाया। जल्द ही वह उन पर अपनी पवित्र आत्मा को उण्डेलने वाला था। पवित्र आत्मा की शक्ति व बुद्धि के द्वारा वे यीशु की आज्ञाओं को पूरा करने के योग्य हो जाएंगे। यीशु हमारे साथ भी कुछ इसी तरह व्यवहार करते हैं। यीशु हम से केवल उन्हीं चीजों की मांग करते हैं जो वह पहले हमें बहुतायात से प्रदान कर चुके होते हैं! यीशु कभी हमसे ऐसी बातों की मांग नहीं करते, जिसे हम कभी पूरा न कर सकें। यीशु केवल हमें उसकी आज्ञा मानने के लिए ही नहीं कहते, बल्कि हमें पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध भी करते हैं ताकि हम उसकी आज्ञा *मानना चाहें* और आज्ञा *मान सकें* तथा उसकी *आज्ञा मानेगें* (1 पतरस 1:1–2)

मसीही मित्रता की दूसरी विशेषता।

मसीही मित्रता की दूसरी विशेषता यह है कि सच्ची मित्रता का हमेशा एक आधार व उसकी सीमाएं होती हैं, जो यीशु मसीह की शिक्षाओं व उसकी आज्ञाओं पर आधारित होती हैं। मसीही मित्र कभी भी पापमय संसार के सिद्धान्तों को पालन नहीं करते। बल्कि मसीही मित्र उन नियमों और शिक्षाओं को पालन करते हैं जो यीशु ने बाइबल में बतायी हैं। वे उसके मार्गों पर चलना *चाहते* हैं, वे उसके मार्गों पर *चल सकते* हैं और वे उसके मार्गों पर *चलेगें*। अच्छे मित्रों की मित्रता का आधार व सीमाएं बाइबल की शिक्षाओं पर आधारित होते हैं।

15:15

प्रश्न 3. यीशु के चेलों को दास क्यों नहीं कहा गया?

टिप्पणी। यीशु ने कहा, 'अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है, परन्तु मैं ने तुम्हे मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। उससे पहली ही शाम को यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए, तो तुम्हे भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए, क्योंकि कोई भी दास अपने स्वामी से बढ़ा नहीं होता(यूहन्ना 13:14–16)। यूहन्ना 13 में चेलों को दास कहके सम्बोधित किया गया, लेकिन यूहन्ना 15 में उन्हें 'दास' कहकर सम्बोधित नहीं किया गया। अतः यीशु के चेले अब दास क्यों नहीं कहे जाते हैं।

"दास "शब्द एक पद को दर्शाता है।

"दास "शब्द यीशु व दूसरों के साथ चेलों के सम्बन्धों को दर्शाता है। उस शाम को यीशु ने अपने चेलों को नम्रता के महत्व के बारे में शिक्षा प्रदान की थी। इस संसार में एक दास कभी अपने स्वामी से बड़ा नहीं हो सकता है। लेकिन यदि गुरू होकर यीशु अपने चेलों के पैर धोते हैं तो, चेलों को एक दूसरे के पैर क्यों नहीं धोना चाहिए। जी हां, चेलों को लगातार ''एक दूसरे का दास होना चाहिए'' और एक दूसरे के पैरों को धोना चाहिए। ''किसी के पैरों को धोने" का अर्थ है कि आप किसी काम को करने के लिए सबसे छोटे स्थान को लेने के लिए तैयार है बाकि लोग नहीं लेना चाहते या फिर वे इस योग्य नहीं हैं। इसी कारण यूहन्ना 13 में यीशु और चेलों तथा चेलों के एक दूसरे के साथ बीच सम्बन्ध पर ज्यादा ज़ोर दिया गया है। चेले "दास" हैं।

"मित्र" शब्द धनिष्ठता को दर्शाता है।

मित्र शब्द चेलों की यीशु के साथ व अन्य चेलों के साथ धनिष्ठता को दर्शाता है। यीशु ने पहले ही अपने चेलों को अनेकों महत्वपूर्ण बातें बता दी थीं। उसने उन्हें बताया था कि उसके इस धरती पर क्यों भेजा गया था। परमेश्वर पिता ने उसे खोये हुओं को ढूढ़ंने और उनका उद्धार करने के लिए भेजा था। उसने उन्हे बताया था कि वह क्यों कष्ट सहने जा रहा है। उसने कहा कि वह अपने सारे लोगों के पापों को मूल्य चुकाने के लिए सारे कष्ट सहेगा। उसने उन्हे बताया कि उसे क्यों इस संसार को छोड़कर जाना ही होगा। वह पुररूत्थान व स्वर्ग पर उठा लिये जाने के द्वारा धरती को छोड़ देगा ताकि वह अपने चेलों पर पवित्र आत्मा को उण्डेल सके तथा स्वर्ग में उनके लिए एक स्थान तैयार कर सके। उसने उन्हे बताया कि किस प्रकार से किसी व्यक्ति का

उद्धार हो सकता है। लोग उस पर विश्वास करने के द्धारा उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। देखिये, सामान्यतः एक स्वामी अपने दासों को यह सारी बातें नहीं बताता। यीशु ने अपने चेलों को ये सारी बातें इसलिए बतायी थीं क्योंकि वे अब उसके मित्र बन चुके थे। जब गुरू और चेलों के बीच सम्बन्धों में घनिष्ठता पर ज़ोर दिया जा रहा हो तो "दास" एक उचित सम्बोधन प्रतीत नहीं होता, वरन " मित्र " के द्वारा उनके सम्बन्ध को सही मायने में परिभाषित किया जा सकता है।

मसीही मित्रता की तीसरी विशेषता।

मसीही मित्रता की तीसरी खासियत यह है कि वे सामान्य बातों तथा परमेश्वर पिता से सीखी हर बात को आपस में बांटते हैं। मसीही लोग खुद मेहनत करके सीखी गयी बातों को भी गुप्त नहीं रखते। मसीही लोग जिनती भी अच्छी बातें उन्होंने सीखी होती हैं दूसरों में ज़रूर बाँटते हैं।

मसीही जन अब व्यवस्था के अधीन नहीं है बल्कि व्यवस्था देने वाले यीशु के मित्र हैं।

दास और मित्र में एक और फरक होता है। यहूदी लोग बहुत से मानवीय प्रथाओं और परम्पराओं में दबे हुए थे। वे व्यवस्था के सेवक नहीं, बल्कि गुलाम थे। लेकिन चेलों को यीशु की ओर से उठाने के लिए हल्का और आसान जूआ दिया गया (मत्ती 11:28–30)। वे अब व्यवस्था के दास नहीं थे, जो मनु य द्वारा बनायी गयी परम्परा व नियमों के हिसाब से जीवन व्यतीत करते थे। वे अब यीशु के मित्र थे, जिन्होंने अपने जीवन को यीशु मसीह के लिए समर्पित कर दिया था। यीशु मसीह का मित्र स्वयं को व्यवस्था या नियमों से नहीं भरता बल्कि वह परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी को देखना चाहता है। यीशु को मित्र यीशु मसीह को ज़्यादा से ज़्यादा अपने हृदय और जीवन को राजा बनाना चाहता है और दूसरों की सहायता करता है ताकि वे भी उसे अपने हृदय और जीवन का राजा बना सकें।

15:13–15

प्रश्न 4. मैं किस प्रकार मित्र बनाता हूँ और किस प्रकार मैं उनके साथ मित्रता बनाएं रखता हूँ?

टिप्पणी। यीशु उन लोगों को अपना मित्र करके बुलाता है जिनके लिए उसने वैकल्पिक तौर पर अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। उसने उन लोगों को अपना मित्र कहा, जो उसकी आज्ञाओं को पूरा करते हैं। वरन वह उन लोगों को अपना मित्र कहता है जिनके साथ वह अपने पिता से सीखी हुई बातों को साझा कर सके।
यह अनुच्छेद हमें यह भी बताता है कि हम मसीही होने के नाते किस प्रकार सच्चे मित्र बना सकते हैं। यूहन्ना 15:13–15 हमें मसीही मित्रता के तीन महत्वपूर्ण सिद्धान्तों के बारे में बताता है।

मसीही मित्रता का पहला सिद्धान्त पद 13 में मिलता है। आप त्यागपूर्ण भाव से किसी व्यक्ति को प्रेम करके उसे अपना मित्र बना लेते हैं।
किसी को आपका मित्र बनने के लिए इन्तज़ार न करें। पहले करें और मित्र बनाएं। संसार में ज्यादातर लोग प्रश्न पूछते हैं,' मेरा मित्र कौन है?' लेकिन एक मसीही व्यक्ति का प्रश्न होना चाहिए, 'मैं किसका मित्र हूँ?' यीशु ने आगे बढ़कर उन लोगों से मित्रता की जो पहले उसके शत्रु हुआ करते थे। यीशु मसीह की तरह मसीही लोग भी प्रेम रहित लोगों के पास जाकर उन पर अपने आत्म–त्यागपूर्ण प्रेम को प्रगट कर सकते हैं। वे सबसे अलग रहने वाले लोगों के पास जाकर दोस्ती दिखा सकते हैं। वे अकेले लोगों के पास जाकर उन पर अपने प्रेम को प्रगट कर सकते हैं। इसके अलावा वे खोये हुओं के पास जाकर उन्हें यीशु के पास ला सकते हैं।

मसीही मित्रता का सिद्धान्त पद 14 में पाया जाता है। हम एक दूसरे को उस अवस्था में खीचंकर मित्रता को बनाये रखते हैं जहां यीशु हमें पहुंचते हुए देखना चाहते हैं।
एक दूसरे को सांसारिक स्तर व पापमय जीवन शैली की ओर नीचे न खीचें। वरन, एक दूसरे को यीशु मसीह की आज्ञाकारिता पूरा करने वाले स्तर पर खींचे। सच्ची मित्रता केवल मसीह तथा मसीह की आज्ञाओं को पूरा करने के माहौल में ही बना कर रखी जा सकती है। संसार के लोग समझते हैं कि हमें लोगों को दोस्त बनाने तथा उनके द्वारा स्वीकृति प्राप्त करने के लिए अपने सिद्धान्तों और जीवन शैली से समझौता करना पड़ता है। लेकिन मसीही लोग जानते हैं कि यदि वे दूसरों के साथ सही मायनों में मित्रता बनाना चाहते हैं, तो उन्हें दूसरों की जीवन शैली व अहमियत को सकारात्मक तौर पर प्रभावित करना होगा। मसीही लोग बुरे लोगों के समान बनकर नहीं, बल्कि लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा मसीह की समानता में बढ़ाकर मित्र बनाते हैं।

मसीही मित्रता का तीसरा सिद्धान्त 15 वचन पर आधारित है। परमेश्वर से प्राप्त प्रकाशनों को आपस में बांटने के द्वारा आप मित्रता की गहराई को बढ़ाते हैं।
अपनी बातों को भौतिक वस्तुओं व उस दिन के समाचारों तक ही सीमित न रखें। लेकिन परमेश्वर,बाइबल तथा उन बातों के बारे में भी जिक्र करें जो परमेश्वर आपको दिन प्रतिदिन सिखा रहे हैं। इस संसार के लोग

अधिकतर आत्मिक बातों के बारे में बातें करते हुए डरते हैं, क्योंकि वे उनसे अनजान होते हैं। मसीहियों को उनकी इस तरह से आत्मिक सत्यों को ढूढ़ने में सहायता करनी चाहिए जिससे उन्हें कोई शर्मिन्दगी न हो। अतः मैं दूसरों का सच्चा मित्र तब हूँ जब मैं कुर्बानी देते हुए दूसरे को प्रेम करने के लिए पहल करता हूँ,जब मैं दूसरों को मसीह के स्तर व आज्ञाओं की सीमा तक खींच लाता हूँ; और जब मैं उनके सामने उन बातों को खोलकर रखता हूँ जिसे परमेश्वर ने मुझे सिखाई हैं।

कदम 4, उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में पायी जाने वाली कौन सी सच्चाई को मसीहीयों के लिए उपयोग करना सम्भव है?
लिखें और बाटें । आईये हम यूहन्ना 15:13–15 में पायी जाने वाली सारी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें, और उनकी सूची बनाएं।
ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई की विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?
लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को निःसंकोच दूसरों के साथ बाँटे।
(याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1यूहन्ना 15:13–17 से सम्भावित उपयोगी बातें।

15:13 पहल करते हुए उन लोगों को अपना मित्र बनाएं, जो आपका विरोधी, अकेला,प्रेम रहित और भटका हुआ हो।
15:14 अपने दोस्तों को मसीह की शिक्षाओं व स्तर तक पहुचाने का प्रयास करें।
15:15 परमेश्वर से सीखी बातों को अपने मित्रों में जरूर से बांटें।

नीतिवचन की पुस्तक से सम्भावित उपयोगी बातें।

12:26 एक धर्मी जन दोस्ती में सर्तक रहता है।
13:20 बुद्धिमान की संगति करने वाला बुद्धिमान बन जाता है।
16:28 कानाफूसी करने से धनिष्ठ मित्रता भी टूट जाती है।
17:17 मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।
18:24 मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा एक मित्र होता है जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।
19:4,6 कंगाल के मित्र भी उससे अलग हो जाते हैं,दानी पुरूष का मित्र हर कोई बनता है।
19:20 सम्मति को सुन और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अनन्त काल में बुद्धिमान ठहरे।
19:25 समझवाले व्यक्ति को डाँट, तब वह अधिक ज्ञान पाएगा।
20:19 जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रकट करता है, इसलिए बकवादी से मेलजोल न रखना।
22:11 जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है, और जिसके वचन मनोहर होते हैं, राजा उसका मित्र होता है।
22:24,25 क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना, और झट क्रोध करने वाले के संग न चलना, कहीं ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे और तेरा प्राण फन्दे में फँस जाए।
23:20 दाखमधु के पीने वालों में न होना, न माँस के अधिक खाने वालों की संगति करना।
24:1,2 बुरे लोगों के विषय में डाह न करना,और न उनकी संगति की चाह रखना, क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते हैं और उनके मुँह से दुष्टता की बात निकलती है।
26:4–5 मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर न देना, ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे। मूर्ख को उसकी मूढ़ता के अनुसार उत्तर देना, ऐसा न हो कि वह अपने लेखे में बुद्धिमान ठहरे।
26:9–10 जैसे मतवाले के हाथ में कांटा गढ़ता है, वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन भी दुःखदायी होता है। जैसे कोई तीरंदाज जो अकारण सबको मारता हो,वैसा ही मूर्खों व राहगीरों का मजदूरी में लगाने वाला भी होता है।
27:5–7 खुली हुई डाँट,गुप्त प्रेम से उत्तम है। जो घाव मित्र के हाथ से लगे वह विश्वासयोग्य है, परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।
27:9 जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के ह्रदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।
27:10 जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो, उसे न छोड़ना और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जाना। प्रेम करने वाला पड़ोसी, दूर रहने वाले भाई से कहीं उत्तम है।
27:17 जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है।

2. यूहन्ना 15:13–15 से व्यक्तिगत प्रयोग।

यूहन्ना सुसमाचार ने मुझे दोस्त बनाने का तरीका सिखाया है। बजाय यह सोचने के कि कौन मेरा दोस्त है, अब मैं पहल करते तथा कुर्बानी के साथ प्रेम करते हुए मित्र बनाना चाहता हूँ। उनकी तरफ से दोस्ती का हाथ बढ़ाये जाने का इन्तज़ार करने की बजाय, मैं दूसरों का मित्र बनाना चाहता हूँ। मैं और ज्यादा आत्म–त्याग व आत्म–इनकार के बारे में सीखना चाहंता हूँ। मैं नीतिवचन की पुस्तक पढ़ूँगा जो बहुतायत से सच्ची मित्रता के बारे में बताती हैं। मैं इन तीन शब्दों को याद रखना चाहता हूँ: आत्म–इनकार, आत्म–त्याग तथा आत्म–अनुशासन।

एक मित्र होने के नाते मैं लगातार अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना चाहता हूँ। यूहन्ना सुसमाचार से मुझे शिक्षा मिली है कि मुझे अपने मित्र को यीशु मसीह की सिद्धान्तों व शिक्षाओं के बारे में बताना हैं और उसे मसीह की शिक्षाओं व आज्ञाओं को मानना सिखाना है। जो कुछ मैंने परमेश्वर से सीखा है वह मैं उन्हें बताना चाहता हूँ। नीतिवचन की पुस्तक बताती है कि अपने मित्र को चमकाना मेरी ज़िम्मेदारी है जिससे वे परमेश्वर व दूसरे लोगों के लिए एक उत्तम व्यक्ति बन सकें। मैं यहां एक शब्द अर्थात *प्रभाव* को याद रखना चाहता हूँ। मैं अपने दोस्तों को उत्तर व सही तरीके से प्रभावित करना चाहता हूँ।

कदम 5.प्रार्थना	**प्रतिउत्तर**
आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें यूहन्ना 15:13–15 में सिखाई हैं। (जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)	

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	(प्रतिक्रियाएं) दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर प्रार्थना करते रहें। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	(निर्धारित कार्य) अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे! समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ यूहन्ना 15:13–15 के आधर पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: प्रेरितों के काम 8:1–11:18 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। वचन : मत्ती 4:4। रोज 5 याद की हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे को अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।